



Hindi Urdu for Health

The Practice of Medicine in Hindi and Urdu

repositories.lib.utexas.edu/handle/2152/64261

Hindi Urdu Flagship | South Asia Institute | Department of Asian Studies | The University of Texas at Austin

Ayurvedic Practice

Ayurveda is an ancient Indian system of medicine that has developed and flourished at least since the time of the fourth Veda, Atharva-Veda. In fact, the sway of Ayurveda, literally, the “scripture of longevity” has been such on the mind of the populace that it has sometimes been called the fifth Veda. It is often thought of as a “holistic” system of medicine that brings into balance the three vital components of the body through the use of herbs and specific dietary practices. Scholars have pointed out that Ayurveda was so developed even in the ancient times that one can find references to surgery within it, referred to as “Shalya Chikitsa.” Not many Ayurvedic doctors practice Shalya Chikitsa now, for that part of medicine has been taken over by modern medicine and hospital based surgery. However, the principles of Ayurveda are still recognized to be universally applicable and therefore, very popular in India and the Indian diaspora. There are many reputed indigenous pharmaceutical companies that produce Ayurvedic medicine for sale all over the world.

ETHICS

Video URI: hdl.handle.net/2152/65497

Contents:

Hindi Transcription	2
Hindi Vocabulary	3
Hindi Questions	4
Urdu Transcription.....	5
Urdu Vocabulary	6
Urdu Questions	7

Hindi Transcription

मेरा नाम डॉक्टर सीमा मुकीम है... मैंने तिब्बिया कॉलेज, करौल बाग, दिल्ली यूनिवर्सिटी से 1993 में पास आउट किया है... और मैं आयुर्वेद में ही प्रैक्टिस करती हूँ... जहां तक बात है फोल्ड की, मैं बेसिकली इन्फर्टैलिटी पे, मतलब कि जनानी बीमारियों पे ज्यादा एम्पैसाईज़ करती हूँ... साथ में हम लोग कैंसर के लिये भी ट्रीटमेंट देते हैं... सैकिंडली, जो आपने पूछा कि जो सामंजस्य वाली बात, यूनानी और आयुर्वेद की, बेसिकली जब हम लोग पढ़ते थे तो हम लोग ये देखते थे कि आमतौर पर हम लोग जो यूज़ कर रहे हैं, जो भी पेड़-पौधे हैं, वो तो सिमिलर हैं, उनकी फॉर्मेशन, जो फाइनल प्रोडक्ट है, उसका नाम अगर आप ए या बी दे दीजिये, उससे कोई फर्क नहीं पड़ेगा... तो जहां तक सामंजस्य की बात है वो तो दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं... आप नाम कुछ दे दीजिये, उससे कोई फर्क नहीं पड़ता... अ... जो आप कहती हैं कि आप कैंसर रिसर्च पर, या कैंसर ट्रीटमेंट पर आप काम कर रही हैं, तो क्या ये ईलाज, क्योंकि कैंसर एक ऐसी बीमारी है जिसका ज्यादातर लोग कहते हैं कि एक हद तक ईलाज हो सकता है, उसके बाद आप कुछ नहीं कर सकते... क्या आपको लगता है कि आयुर्वेद में इसका पूरा पक्का ईलाज है? पूरा पक्का ईलाज, तो आप किसी चीज को 100% नहीं कह सकते कि इसका 100% ये ट्रीटमेंट है... अगर कोई ऐसा दावा करता है कि ये 100% हम ट्रीटमेंट कर देंगे, तो वो, मेरे हिसाब से वो सही नहीं है... कोई भी ईलाज करने के लिये अगर हम, सपोज़ कर लीजिये ऐलोपैथिक साईड पर भी जाते हैं, तो सर्जरी कर देते हैं... रेडियो थैरेपी या कीमियो थैरेपी और डिफरेंट टाईप ऑफ ट्रीटमेंट एडाप्ट करते हैं... लेकिन वो भी ये नहीं कह सकते कि हमने सर्जरी कर दी है तो हमने ये कैंसर को ट्रीट कर दिया है... ठीक है ना... उसी तरह से हम लोग 100% दावा कोई भी नहीं कर सकता कि हम इस बीमारी का ईलाज 100% कर देंगे... जहां तक बात है एक्सटेंशन ऑफ लाईफ की, क्योंकि सर्जरी में भी या कीमोथैरेपी से या रेडियो थैरेपी से भी हम एक तरह से लाईफ को एक्सटेंड ही तो कर रहे हैं और हम कुछ नहीं कर रहे... किसी भी ट्रीटमेंट को हम उठायें तो वो सिर्फ एक्सटेंशन ऑफ लाईफ है... हम जब आयुर्वेदिक दवाईयों से या यूनानी दवाईयों से किसी पेशेंट को ट्रीट करते हैं, स्पेशली फॉर कैंसर, तो एक चीज आप, हम उसको बिल्कुल क्लियर करके चलते हैं कि दिस इज़ जस्ट एक्सटेंशन ऑफ लाईफ... ठीक है ना... दूसरी चीज ये है, अगर हमारे पास पेशेंट बिना किसी इन्वेस्टीगेशन के आता है, तो हम लोग पहले कोशिश ये ही करते हैं कि हम लोग कोई उसका एफ.एल.ए.सी. ना करायें... और हम सिर्फ एम.आर.आई., बेसिकली एम.आर.आई. से या सी.टी. या जो भी हों, मतलब नॉन इन्वेसिव प्रोसीज़र से हम लोग उसको डाईग्नोस करके उसे ट्रीटमेंट दें... तो मेरे खयाल से अगर किसी पेशेंट की हम पेनलैस लाईफ को एक्सटेंड करते हैं तो वो काफी बड़ा एचीवमेंट हो जाता है... जैसे कैंसर ट्रीटमेंट की बात आती है, उसमें ये कहा जाता है कि जो ट्रीटमेंट होता है, ये पैलियेटिव है, ये क्यूलियेटिव नहीं है... तो क्या आयुर्वेद में भी वो पैलियेटिव है क्यूलियेटिव नहीं? एग्ज़ैक्टली आप किसी चीज को आप टर्मियोनोलॉजी में बांध नहीं सकते, कि ये पर्टिकुलरली ये ट्रीटमेंट है या वो ट्रीटमेंट है... ऐसा भी हमने देखा है कई पेशेंट्स में कि कैंसर ग्रोथ स्टार्ट हुई है, सपोज़ कर लीजिये फर्स्ट स्टेज में है पेशेंट आया, तो वो ग्रोथ रिप्रैस भी हो गई है... तो आप एग्ज़ैक्टली किसी टर्मियोनोलॉजी में आप बांध के नहीं चल सकते कि ये यही काम करेगा और ये काम नहीं करेगा या ये नहीं कर सकता और ये कर सकता है... आप किसी टर्म पे उसको नहीं बांध सकते... एक मिनट, पैन कर लीजिये आप... इसमें थोड़ा सा... एक मिनट... कैंसर वाली, उसी प्वाइंट पे, थोड़ा सा ये है कि बेसिकली आयुर्वेद और यूनानी की दवाईयां एंटी ऑक्सीडेंट की तरह से भी काम करती हैं और लाईफ को थोड़ा सा बढ़ाती हैं... हमारी दवाईयों से, जो भी हम दवाईयां यूज़ करते हैं, कैंसर के पेशेंट्स पे, उन दवाईयों से ये देखा गया है कि जो होपलैस पेशेंट्स हैं, जिन्हें ये कह दिया जाता है, मार्डन ट्रीटमेंट लेने के बाद भी, ये हमारे पास बहुत पेशेंट आते हैं... जिन्हें ये कह दिया जाता है कि ये तो बस गया, घर जा के सेवा करो, खिदमत करो, हमने कई बार देखा है, एक पेशेंट तो मेरी अभी, अनफाच्युनेटली, ड्यू टू ओल्ड ऐज, अभी पैंसठ साल की ऐज में डैथ्य हुई है, शास्त्री नगर में रहती

थी, चंदा देवी नाम था... मेरे पास उसकी एम.आर.आई. और सी.टी. वगैरह आज भी पड़े हैं, उन्हें एब्डॉमिनल कैंसर था... एब्डॉमिनल कैंसर, उन्हें स्टमक पर काफी बड़ा ग्रोथ था... हमने यूनानी ईलाज उन्हें यही बता के चलाया कि हम आपकी लाईफ को सिर्फ बढ़ा रहे हैं... और वो दस साल तक जिंदा रहीं, जबकि ऑल इंडिया इन्स्टीट्यूट ने उन्हें कह दिया था कि होपलैस है, ले जाओ, कुछ दिन सेवा करो, और चली जायेगी... और उनकी डैथ कैंसर की वजह से नहीं हुई, अब वो नैचुरल डैथ मरी हैं... और लास्ट में उनके बिल्कुल, ट्रीटमेंट के बार, छः-सात महीने के ट्रीटमेंट के बाद मैंने उन्हें देखा है कि, जब मैंने उनके दुबारा से रीडिन्वैस्टीगेट कराया तो टोटल, जितना भी ट्यूमर था, सब डिज़ाल्व हो चुका था... वो 100% क्योर थी... हमारे पास क्योंकि रिसर्च के फैसिलिटीज़ कम हैं, हम पूरी तरह से ये पता नहीं लगा पाते कि हमारी मैडिसन का जो रूट ऑफ वर्क है वो क्या है... क्योंकि यूनानी ट्रीटमेंट को अभी गौरमेंट की तरफ से भी इतनी फैसिलिटी नहीं मिल पाई कि हम लोग अपनी रिसर्चों को कंप्लीट कर सकें... लेकिन ये पता ना होते हुये भी ट्रीटमेंट का जो पार्ट रहा है हमारा ज्यादा सक्सैस्फुल रहा है और हम लोगों के पेशेंट अच्छी तरह से ठीक होते हैं, कैंसर में भी... हम ये नहीं कहते कि 100% क्योर कर दिया है, हमने लाईफ सेव कर दी, लेकिन उनका लाईफ थोड़ी सी बढ़ जरूर जाती है...

Hindi Vocabulary

Tibiya College	तिब्बिया कॉलेज
Ayurveda	आयुर्वेद
Womens' illnesses	जनानी बिमारियों
Harmony, consistency, congruence, unison, concordance	सामंजस्य
Unani and ayurveda	यूनानी और आयुर्वेद
Trees and plants	पेड़-पौधे
Two sides of the same coin	एक ही सिक्के के दो पहलू
Difference	फर्क
Cure, remedy, treatment	ईलाज
Treat to a certain extent	एक हद तक ईलाज
Sure treatment	पूरा पक्का ईलाज
Cannot say	नहीं कह सकते
Claim	दावा
Treatment for the illness	बीमारी का ईलाज
With Ayurvedic medicines	आयुर्वेदिक दवाईयों से
With Unani medicines	यूनानी दवाईयों से
Will work	काम करेगा
Will not work	काम नहीं करेगा
Ayurveda and Unani medicines	आयुर्वेद और यूनानी की दवाईयां

Like an antioxidant	एंटी ऑक्सीडेंट की तरह से
Works	काम करती हैं
Serve	सेवा करो
Will only extend life	लाईफ को सिर्फ बढ़ा रहे हैं
Alive	जिंदा

Hindi Questions

1. डॉक्टर सीमा मुकीम के अनुसार आयुर्वेद और यूनानी एक ही सिक्के के दो पहलू हैं, क्यों?

- 1 दवाओं के नाम अलग अलग हैं और पेड़ पौधे दवाई बनाने के लिये भी अलग हैं
- 2 दवाओं के नाम एक हैं और पेड़, पौधे दवा बनाने के लिये अलग हैं
- 3 दवाओं के नाम कुछ भी हों पर पेड़, पौधे दवा बनाने के लिये एक ही हैं
- 4 कुछ कुछ मिलता जुलता है

2. सीमा जी के अनुसार क्या किसी पैथी में इलाज पूरा हो सकता है?

- 1 आयुर्वेद में इलाज पूरा हो सकता है, बाकी पैथियों में नहीं
- 2 यूनानी में इलाज पूरा हो सकता है, बाकी पैथियों में नहीं
- 3 किसी में भी मरीज़ पूरी तरह ठीक नहीं हो सकता है पर उसकी ज़िन्दगी और बढ़ सकती है
- 4 एलोपैथी में सर्जरी से इलाज पूरा ठीक हो जाता है

3. आयुर्वेद में दवाएँ काम करती हैं, सीमा जी के अनुसार ये क्यों नहीं साबित हो सकता है?

- 1 दवाएँ मिलती नहीं है
- 2 दवाएँ दूर दूर से आती हैं
- 3 रिसर्च फ़ैसिलीतीज़ कम हैं
- 4 दवाएँ रिसर्च के लायक नहीं है

Urdu Transcription

میرا نام ڈاکٹر سیما مقیم ہے۔۔ میں نے طبّہ کالج، کرل باغ، دلی یونیورسٹی سے بی۔یو۔ایم۔ایس 1993 میں پاس آؤٹ کیا ہے۔۔ اور میں آئیورس میں ہی پریکٹس کرتی ہوں۔۔ جہاں تک بات ہے فیلڈ کی، میں بیسکلی انفرٹلٹی پہ، مطلب جو۔۔ زنانی بیماریوں کے اوپر زیادہ ایمفاسز کرتی ہوں۔۔ ساتھ میں ہم لوگ کینسر کے لئے بھی ٹریٹمنٹ دیتے ہیں۔۔ سیکنڈلی، جو آپ نے پوچھا کہ جو سامنسیہ والی بات، یونانی اور آئیورس کی، بیسکلی جب ہم لوگ پڑھتے تھے تو ہم لوگ یہ دیکھتے تھے کہ عام طور پہ جو ہم لوگ یوز کر رہے ہیں، جو بھی پیڑ پودے ہیں، وہ تو سملر ہیں، ان کی فارمیشن، جو فائنل پروڈکٹ ہے، اس کا نام اگر آپ اے یا بی دے دیجئیے، اس سے کوئی فرق نہیں پڑیگا۔۔ تو جہاں تک سامنسیہ کی بات ہے وہ تو دونوں ایک ہی سگے کے دو پہلو ہیں۔۔ آپ نام کچھ دے دیجئیے، اس سے کوئی فرق نہیں پڑتا۔۔

جو آپ کہتی ہیں کہ آپ کینسر ریسرچ پر، یا کینسر ٹریٹمنٹ پر آپ کام کر رہی ہیں، تو کیا یہ علاج، کیونکہ کینسر ایک ایسی بیماری ہے جس کا زیادہ تر لوگ کہتے ہیں کہ ایک حد تک علاج ہو سکتا ہے، اس کے بعد آپ کچھ نہیں کر سکتے۔۔ کیا آپ کو لگتا ہے کہ آئیورس میں اس کا پورا پکا علاج ہے؟

پورا پکا علاج، تو آپ کسی چیز کو آپ ہنڈریڈ پرسینٹ نہیں کہہ سکتے کہ اس کا ہنڈریڈ پرسینٹ یہ ٹریٹمنٹ ہے۔۔ اگر کوئی ایسا دعویٰ کرتا ہے کہ یہ ہنڈریڈ پرسینٹ ہم ٹریٹ کر دیں گے، تو وہ، میرے حساب سے وہ صحیح نہیں ہے۔۔ کوئی بھی علاج کرنے کے لئے اگر ہم، سپوز کر لیجئیے ایلوپتھک سائڈ پر بھی جاتے ہیں، تو وہ سرجری کر دیتے ہیں۔۔ ریڈیو تھیریپی یا کیمیو تھیریپی اور ڈفرینٹ ٹائم آف ٹریٹمنٹ اڈاپٹ کرتے ہیں۔۔ لیکن وہ بھی یہ نہیں کہہ سکتے کہ ہم نے سرجری کر دی ہے تو ہم نے یہ کینسر کو ٹریٹ کر دیا ہے۔۔ ٹھیک ہے نا۔۔ اسی طرح سے ہم لوگ ہنڈریڈ پرسینٹ دعویٰ کوئی بھی نہیں کر سکتا کہ ہم اس بیماری کا علاج ہنڈریڈ پرسینٹ کر دیں گے۔۔ جہاں تک بات ہے ایکسٹینشن آف لائف کی، کیونکہ سرجری میں بھی یا کیمیو تھیریپی سے یا ریڈیو تھیریپی سے بھی ہم ایک طرح سے لائف کو ایکسٹینڈ ہی تو کر رہے ہیں اور ہم کچھ نہیں کر رہے۔۔ کسی بھی ٹریٹمنٹ کو ہم اٹھائیں تو وہ صرف ایکسٹینشن آف لائف ہے۔۔ ہم جب آئیورس دوائیوں سے یا یونانی دوائیوں سے کسی پیشینٹ کو ٹریٹ کرتے ہیں، اسپیشلی فار کینسر، تو ایک چیز آپ، ہم اس کو بالکل کلیئر کر کے چلتے ہیں کہ دس از جسٹ ایکسٹینشن آف لائف۔۔ ٹھیک ہے نا۔۔ دوسری چیز یہ ہے، اگر ہمارے پاس پیشینٹ بنا کسی انویسٹگیشن کے آتا ہے، تو ہم لوگ پہلے کوشش یہ ہی کرتے ہیں کہ ہم لوگ کوئی اس کا ایف۔ایل۔اے۔سی۔ نا کرائیں۔۔ اور ہم صرف ایم۔آر۔آئی۔ بیسکلی ایم۔آر۔آئی۔ سے یا سی۔ٹی۔ یا جو بھی ہیں، مطلب نان انویس پروسیجر سے ہم لوگ اس کو ڈانگنوز کر کے اسے ٹریٹمنٹ دیں۔۔ تو میرے خیال سے اگر کسی پیشینٹ کی ہم پینلیس لائف کو ایکسٹینڈ کرتے ہیں تو وہ کافی بڑا اچیومنٹ ہو جاتا ہے۔۔

جیسے کینسر ٹریٹمنٹ کی بات آتی ہے۔۔ اس میں یہ کہا جاتا ہے کہ جو ٹریٹمنٹ ہوتا ہے، یہ پیلیٹو ہے، یہ کیوریٹو نہیں ہے۔۔ تو کیا آئیورس میں بھی وہ پیلیٹو ہے کیوریٹو نہیں

اگر یکتی آپ کسی چیز کو آپ ٹرمولوجی میں باندھ نہیں سکتے، کہ یہ پرتیکولرلی یہ ٹریٹمنٹ ہے یا وہ ٹریٹمنٹ ہے۔۔ ایسا بھی ہم نے دیکھا ہے کئی پیشینٹس میں کہ کینسر گروتھ اسٹارٹ ہوئی ہے، سپوز کر لیجئیے فرسٹ اسٹیج میں پیشینٹ آیا ہے، تو وہ گروتھ ریگریس بھی ہو گئی ہے۔۔ تو آپ اگر یکتی کسی ٹرمولوجی میں آپ باندھ کے نہیں چل سکتے کہ یہ بھی کام کریگا اور یہ کام نہیں کریگا یا یہ نہیں کر سکتا اور یہ کر سکتا ہے۔۔ آپ کسی ٹرمس پہ اس کو نہیں باندھ سکتے۔۔

ایک منٹ، پین کر لیجئیے آپ۔۔ اس میں تھوڑا سا۔۔ ایک منٹ۔۔

اس میں۔۔ تھوڑا سا، کینسر والے اسی پوائنٹ پہ تھوڑا سا یہ ہے کہ بیسکلی آئیورس اور یونانی کی دوائیاں اینٹی آکسیڈینٹ کی طرح سے بھی کام کرتی ہیں اور لائف کو تھوڑا سا بڑھاتی ہیں۔۔ ہماری دوائیوں سے، جو بھی ہم دوائیاں اپنی یوز کرتے ہیں، کینسر کے پیشینٹس پہ، ان دوائیوں سے یہ دیکھا گیا ہے کہ جو ہو پلیس پیشینٹس ہیں، جنہیں یہ کر دیا جاتا ہے، مائرن ٹریٹمنٹ لینے کے بعد بھی، یہ ہمارے پاس بہت پیشینٹ آتے ہیں۔۔ جنہیں یہ کہ دیا جاتا ہے کہ یہ تو بس گیا، گھر جا کے سیوا کرو، خدمت کرو، ہم نے یہ کئی بار دیکھا ہے، ایک پیشینٹ تو میری ابھی، انفورچونٹی،

ان کی۔۔۔ ڈیو ٹو اولڈ ایچ، ابھی پینسٹھ سال کی ایچ میں ڈیپتھ ہوئی ہے، شاستری نگر میں رہتی تھی، چندا دیوی نام تھا۔۔۔ اور میرے پاس اس کی ایم۔ آر۔ آئی۔ اور سی۔ ٹی۔ وغیرہ آج بھی پڑے ہیں، انہیں ایبڈامنل کینسر تھا۔۔۔ ایبڈامنلی کینسر، اسٹمک پہ کافی بڑا گروتھ تھا۔۔۔ ہم نے یونانی علاج انہیں یہی بتا کے چلایا کہ ہم آپ کی لائف کو صرف بڑھا رہے ہیں۔۔۔ اور وہ دس سال تک زندہ رہی، جب کہ آل انڈیا انسٹیٹوٹ نے انہیں کہ دیا تھا کہ ہوپلیس ہے، لے جاؤ، کچھ دن سیوا کرو، اور چلی جائیگی۔۔۔ اور ان کی ڈیپتھ کینسر کی وجہ سے نہیں ہوئی، اب وہ نیچرل ڈیپتھ مری ہیں۔۔۔ اور لاسٹ میں ان کے بالکل، ٹریٹمنٹ کے بعد، چھ سات مہینے کے ٹریٹمنٹ کے بعد میں نے انہیں دیکھا ہے کہ، جب میں نے ان کے دوبارہ سے ری۔انویسٹیگیٹ کرایا تو ٹوٹل، جتنا بھی ٹیومر تھا، سب ڈزالو ہو چکا تھا۔۔۔ وہ ہنڈریڈ پرسینٹ کیور تھی۔۔۔ ہمارے پاس کیونکہ ریسرچ کے فسلٹیز کم ہیں، ہم پوری طرح سے یہ پتہ نہیں لگا پاتے کہ ہماری میڈسن کا جو روٹ آف ورک ہے وہ کیا ہے۔۔۔ کیونکہ یونانی ٹریٹمنٹ کو ابھی گورمینٹ کی طرف سے بھی اتنی فسلٹی نہیں مل پائی کہ ہم لوگ اپنی ریسرچوں کو کمپلیٹ کر سکیں۔۔۔ لیکن یہ پتہ نا ہوتے ہوئے بھی ٹریٹمنٹ کا جو پارٹ رہا ہے ہمارا زیادہ سکسیسفل رہا ہے اور ہم لوگوں کے پیشینت اچھی طرح سے ٹھیک ہوتے ہیں، کینسر میں بھی۔۔۔ ہم یہ نہیں کہتے کہ ہنڈریڈ پرسینٹ کیور کر دیا ہے یا ہم نے لائف سیو کر دی، لیکن

Urdu Vocabulary

Tibiya College	طبیبہ کالج
Ayurveda	آیوروید
Womens' illnesses	زناتی بیماریاں
Harmony, consistency, congruence, unison, concordance	سامنجسیہ
Unani and ayurveda	یونانی اور آیوروید
Trees and plants	پیڑ پودے
Two sides of the same coin	ایک ہی سگے کے دو پہلو
Difference	فرق
Cure, remedy, treatment	علاج
Treat to a certain extent	ایک حد تک علاج
Sure treatment	پورا پکا علاج
Cannot say	نہیں کہہ سکتے
Claim	دعویٰ
Treatment for the illness	بیماری کا علاج
With Ayurvedic medicines	آیورویڈک دوائیوں سے
With Unani medicines	یونانی دوائیوں سے
Will work	کام کریگا
Will not work	کام نہیں کریگا
Ayurveda and Unani medicines	آیورویڈ اور یونانی کی دوائیاں
Like an antioxidant	اینٹی۔آکسڈینٹ کی طرح سے

Works	کام کرتی ہیں
Serve	سیوا کرو
Will only extend life	لائف کو صرف بڑھا رہے ہیں
Alive	زندہ

Urdu Questions

ڈاکٹر سیما مقیم کس چیز میں اسپیشلائز کرتی ہیں؟

- 1 دماغی بیماریوں میں
- 2 پیٹ کی بیماریوں میں
- 3 مردانی بیماریوں میں
- 4 زنانی بیماریوں میں

ڈاکٹر سیما کے مطابق آیوروید اور یونانی ایک ہی سگے کے دو پہلو ہیں، کیوں؟

- 1 دواؤں کے نام الگ الگ ہیں اور پیڑ، پودے دوا بنانے کے لئے بھی الگ ہے
- 2 دواؤں کے نام ایک ہیں اور پیڑ، پودے دوا بنانے کے لئے الگ ہیں
- 3 دواؤں کے نام کچھ بھی ہوں لیکن پیڑ، پودے دوا بنانے کے لئے ایک ہی ہیں
- 4 کچھ کچھ ملتے جلتے ہیں

سیما جی کے مطابق کیا کسی پیتھی میں پورا علاج ہو سکتا ہے؟

- 1 آیوروید میں علاج پورا ہو سکتا ہے، باقی پیتھیوں میں نہیں
- 2 یونانی میں علاج پورا ہو سکتا ہے، باقی پیتھیوں میں نہیں
- 3 کسی میں بھی مریض پوری طرح ٹھیک نہیں ہو سکتا، لین اس کی زندگی بڑھ سکتی ہے
- 4 ایلوپیتھی میں سرجری سے علاج پورا ٹھیک ہو جاتا ہے

آیوروید میں دوائیں کام کرتی ہیں، ڈاکٹر صاحب کے مطابق یہ کیوں نہیں ثابت ہو سکتا ہے؟

- 1 دوائیں ملتی نہیں ہیں
- 2 دوائیں دور دور سے آتی ہیں
- 3 ریسرچ فیسلٹیز کم ہیں
- 4 دوائیں ریسرچ کے لائق نہیں